



जवाहर कृषि संदेश

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय

● वर्ष : 3 अंक : 11

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ (म.प्र.)

● जनवरी-मार्च 2011

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक सम्पन्न

16 नवम्बर 2010 को केन्द्र द्वारा परामर्शदात्री समिति की बैठक आयोजित की गयी जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. पी.के. जैन, संचालक विस्तार सेवायें, जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर एवं अध्यक्ष डॉ. एम.पी. गुप्ता, प्रधान कीट वैज्ञानिक, पदों पर आसन्न हुये। डॉ. आर.के.एस. तोमर, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ ने रबी 2009-10, खरीफ 2010 की उपलब्धियों एवं रबी 2010-11, खरीफ 2011 की कार्ययोजना को विस्तार से समिति के समक्ष प्रस्तुत किया।

डॉ. तोमर ने केन्द्र द्वारा किये गये परीक्षणों एवं प्रदर्शनों में से "श्री" (एस.आर.आई.) पद्धति से किसान भाई कम पानी में संसाधनों का समुचित प्रयोग कैसे करें के बारे में बताया। खेतिहार महिलाओं में शम शक्ति कम करने के उपायों में दातेदार हाँसिया एवं मृक्ख कीलक यंत्रों की उपयोगिता एवं क्षमता को प्रस्तुत किया। मेड एवं नाली पद्धति से सोयाबीन की बुबाई करके कम पानी में अधिक से अधिक लाभ कैसे ले? पशुपालन में मुर्गी की दुजाजी नस्ल का घर के पिछवाड़े पालने, पशुओं के बाह्य एवं आंतरिक परिच्छियों की रोकथाम से पशुओं के उत्पादन पर प्रभाव की विस्तार से चर्चा की, साथ ही कम अवधि एवं अधिक पैदावार देने वाली धन की प्रजाति जे.आर. 201 लधा सोयाबीन की कम अवधि की प्रजाति जे.एस. 95-60 के परिणामों को समिति के समक्ष प्रस्तुत किया।

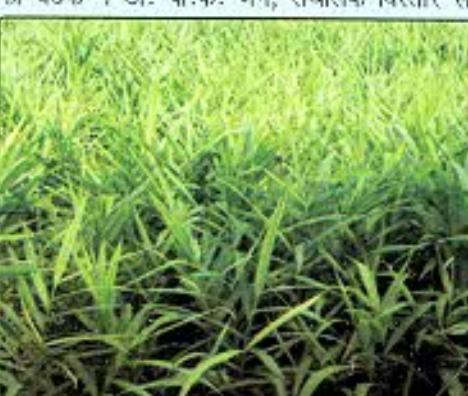
श्री धर्मदास यादव, कृषक सदस्य ने माननीय संचालक के समक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किये गये अदरक के संबंध में प्रयासों का उल्लेख किया। उपसंचालक पशुपालन डॉ. डी.के. गोतम, उपसंचालक उद्यानिकी श्री वी.पी.सिंह परिहार एवं डॉ. के.के. वैद्य, सहायक संचालक कृषि विभाग एवं कृषण कल्पण ने विभागीय कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

डॉ. पी.के. जैन संचालक विस्तार सेवायें, जबलपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विभाग, पशुपालन एवं उद्यानिकी विभागों के साथ सहयोग को किस तरह और उपयोगी बनाया जाये, के बारे में अधिकारियों को सलाह दी। साथ ही टीकमगढ़ जिले में कम पानी में उद्यानिकी ही एक मात्र उपाय हो सकता है, जिससे किसान भाई अपनी आर्थिक स्थिति का उत्थान कर अन्य स्थानों को रोजगार की तलाश में पलायन को रोका जा सकता है। डॉ. जैन ने वर्तमान परिस्थितियों में कम समय वाली फसलों मूली, पालक, पैथी, धनिया जैसी फसले कृषक उगाकर अपनी आर्थिक स्थिति एवं पौष्टक स्तर को सुधार सकेंगे। वैज्ञानिकी परामर्शदात्री की बैठक में विभिन्न विभागों के कुल 21 गणनान्य सदस्य उपस्थित रहे।



सफलता की कहानी

श्री धर्मदास यादव पुत्र श्री छिमे यादव जो कि ग्राम भोपालपुरा ब्लाक पृथ्वीपुर के एक लग्नशील एवं कर्मठ किसान है। जिनके पास अपनी 2 एकड़ भूमि है जिस पर श्री यादव खरीक में मक्का, अदरक एवं रबी में गेहूं एवं जींजो फसल के रूप में उगाते थे। श्री यादव के गांव में अधिकांश कृषक अदरक की खेती करते हैं किंतु गांव की भूमि अदरक के लिये बहुत ही उपयुक्त है तथा गांव ब्लाक के नजदीक होने के कारण अद्या मूल्य भी किसानों को भिल जाता है लेकिन क्षेत्रीय प्रजाति लगाने से उन्हें तना सड़न रोग के भयकर प्रक्रोप से कभी-कभी लाभ की अपेक्षा लानि उठानी पड़ती थी जिससे श्री यादव एवं गांव के अन्य किसानों को अदरक की खेती के प्रति रुद्धान कम होता जा रहा था। इसी बीच श्री धर्मदास कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ के सम्पर्क में आये तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों से परिचर्चा में श्री यादव ने वैज्ञानिकों से अपनी समस्या के बारे में परिचर्चा की एवं साथ ही अपने गांव में अदरक के प्रक्षेप प्रदर्शन लगाने के लिये अनुरोध किया जिससे गांव वालों को अदरक की फसल से आर्थिक लाभ द्वारा कृषकों की आर्थिक उन्नति हो सके। केन्द्र के वैज्ञानिकों ने श्री यादव के गांव में अदरक के प्रदर्शन ढालने से पहले किसानों का निम्न बिन्दुओं पर ध्यानकरण किया जैसे- जिस खेत में लगातार अदरक बोया जा रहा है उसमें ना बोये, जिस खेत में बीमारी आती है उसमें अदरक ना लगाना, खेत में पानी का ठंडगव ना हो, बीज रोग रोधी जाति जैसे सुप्रभा का लगावाया तथा बीज को 3 ग्राम रिडोमिल (पेटालकिल) एक लीटर पानी के हिसाब से बीज को उपचारित करके बुबाई की कराई तथा बुबाई के बाद इसी दिवासे दो ड्रेविंग भी कराई। 30:20:30, नब्रजन, फास्नोरस एवं पोटाश कि.ग्रा./एकड़ के हिसाब से प्रयोग की। श्री यादव को प्रति एकड़ 60 घिंवटल उपज प्राप्त हुई तथा कुल लागत प्रति एकड़ रुपये 1,20,000 आई। श्री यादव को शुद्धलाभ प्रति एकड़ के हिसाब से 1,80,000 रुपये मिले। श्री यादव ने अपनी फसल से प्राप्त हुये उत्पाद को गांव वालों एवं पड़ोसी गांव के लूप में बेचा जिससे गांव में सुप्रभा जाति को फैलाया। श्री यादव की फसल इस वर्ष भी विगत वर्षों की भाति ही बहुत अच्छी है। श्री यादव फसल के उत्पादन एवं उससे लाभ से बहुत ही प्रभावित है। श्री यादव कहते हैं उत्पादन प्रति वर्ष उपयुक्त बातों को ध्यान में रखकर अदरक उगाकर अपनी एवं क्षेत्रवासियों को उत्साहित कर आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। श्री यादव ने अपनी सफलता का राज 16 जून 2010 को किसान मेले में जिले के कलेक्टर के समक्ष एवं 3 नवम्बर 2010 को कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ की वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक में डॉ. पी.के. जैन, संचालक विस्तार सेवायें, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के समक्ष कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना की। श्री यादव कहते हैं जो भी किसान भाई अदरक की फसल से सुनिश्चित लाभ लेना चाहते हैं उनको उपरोक्त कहीं हुयी बातों की ध्यान में रखकर ही लाभ ले सकते हैं।



● उपलब्धियाँ

अग्रिम पंचित प्रदर्शन

- सोयाबीन-** कम अवधि की प्रजाति जे.एस. 93-05 का प्रदर्शन सम्पूर्ण तकनीक के साथ कृषकों के प्रक्षेत्र पर किया।
तकनीक- जे.एस. 93-05, कूड़ में बोनी, 20:60:20:30 नबजन फास्फोरस, पोटास सल्फर कि.ग्रा./हे.+राइजो+पी.एस.बी. प्रत्येक 20 ग्राम/कि.ग्रा. बीज+ गर्भी की गहरी जुताई+ट्राईजोफोस का छिड़काव 40-41 दिन पर/1000 मिली/हे.+प्रकाश प्रपंच+ लकड़ी की खुण्टी/50/हे.
परिणाम- उपज में 30 प्रतिशत की बृद्धि हुई तथा अतिरिक्त लाभ रूपये 4700 हुआ।
- उड्ड फसल-** आजाद-1 प्रजाति के साथ सम्पूर्ण तकनीक का प्रदर्शन किया गया।
परिणाम- उपज में 76 प्रतिशत की बृद्धि हुई एवं अतिरिक्त लाभ रूपये 9800/हे. हुआ।
- मक्का-** जे.एम. 216 जल्दी पकने वाली (95-100 दिन) एवं अधिक उपज (35 कि.व./हे.) वाली प्रजाति को प्रदर्शित किया गया।
परिणाम- उपज क्षेत्रीय प्रजाति मकई की अपेक्षा 34.6 प्रति की बृद्धि हुई एवं अतिरिक्त लाभ रूपये 5,985/हे. हुआ।
- वान-** वान की सुंगठित एवं अधिक आय वाली प्रजाति सुंगधा-5 के प्रदर्शन आयोजित किये गये।
परिणाम- खुरीफ याज- की प्रजाति नाशिक- 53 को किसानों के प्रक्षेत्र पर प्रदर्शित किया गया।
- मेड एवं नाली पद्धति-** सोयाबीन की मेड एवं नाली पद्धति का प्रदर्शन किसानों के प्रक्षेत्र पर किया।
परिणाम- सामान्य पद्धति की अपेक्षा उपज में 40.6 प्रतिशत की बृद्धि हुई तथा अतिरिक्त आय रूपये 7,374 प्राप्त हुई।
- दातिदार हासिया-** का प्रदर्शन खेतिहर महिलाओं में श्रम शक्ति को घटाने के लिये किया गया।
परिणाम- प्रति हे. कटाई करने में 30.59 प्रतिशत समय की बचत हुई।
- पोषक वाटिका-** खेतिहर महिलाओं के यहां खाद्य एवं पोषक वाटिका के प्रदर्शन लगावाये जिनसे वर्ष भर सब्जी एवं फल उपलब्ध हो सके।
- संकुल कृषि नाशक-** पशुओं में ब्राह्य एवं आंतरिक परिजीवियों की रोकथाम के लिये आइबर मेकिटन हाइटेक बोलस (2 बोलस प्रति पशु प्रति वर्ष) का प्रदर्शन किया गया।
परिणाम- 6.87 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन बढ़ा तथा 11.67 प्रतिशत शारीरिक बजन में बृद्धि हुई।
- भैस के बच्चों में कृषि नाशक-** पिपराजीन का प्रदर्शन किया गया।
परिणाम- बच्चों के शारीरिक भार में 19.3 प्रतिशत की शारीरिक बृद्धि तथा 26.67 प्रतिशत मृत्युदर में कमी पायी गयी।
- मुर्गी-** द्विकाजी नस्ल जो मास एवं अण्डे दोनों के लिये उपयुक्त है का प्रदर्शन किया गया।
परिणाम- अण्डों की संख्या में 125 प्रतिशत की बृद्धि तथा रूपये 142 (छ: माह में) प्रति मुर्गी अतिरिक्त प्राप्त हुये।
- खनिज लवण-** संकर गायों में 30-40 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से खनिज मिश्रण दिया जा रहा है। जिससे उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ सके।

प्रदेश परीक्षण

- दान-** जे.आर.201 (कम अवधि एवं अधिक उपज) प्रजाति का परीक्षण किया गया।
परिणाम- उपज में 91.42 प्रतिशत की बृद्धि तथा अतिरिक्त आय रूपये 19300/- हे. हुई।
- सोयाबीन-जे.एस. 95-60** (कम अवधि एवं अधिक उत्पादन) प्रजाति का परीक्षण किया गया।
परिणाम- उपज 30:96 प्रतिशत की बृद्धि तथा अतिरिक्त आय रु. 4,790 प्राप्त हुई।
- सोयाबीन-** समन्वित कीट प्रबंधन-
तकनीक- गर्भी की गहरी जुताई+प्रकाश प्रपंच+लकड़ी की 'T' आकार की खुटियां 50/हे. + एक छिड़काव ट्राईजोफोस का 45 दिन पर/ 1000 मिली./हे.
- परिणाम-** उपज में 19.35 प्रतिशत की बृद्धि एवं अतिरिक्त आय रूपये 7580/- प्राप्त हुई।
- दान की श्री पद्धति-** श्री पद्धति का परीक्षण किसानों के प्रबोत्र पर किया गया, जिसमें 10-12 दिन पुरानी पौध को 25X25 सेमी. दूरी पर रोपित किया गया।
परिणाम- उपज में 38.90 प्रतिशत की बृद्धि तथा कुल अतिरिक्त आय रु. 19630/- प्राप्त हुई।
- नाली छीलक मक्का यंत्र-** परीक्षण खेतिहर महिलाओं पर किया गया जिसमें 72.7 प्रतिशत समय की बचत एवं 46.86 प्रतिशत क्षमता वर्धन हुआ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	संख्या	प्रतिभागी
1.	फलल उत्पादन	8	152
2.	उत्पादिकी	2	39
3.	पशुपालन	4	88
4.	कृषि नै नहिलाओं की आजीवाई	6	106
5.	पौध संरक्षण	4	83
6.	रांगांधक प्रबंधन	3	150
7.	रुदा विकास	1	23

ग्रामीण युवक प्रशिक्षण

क्र.सं.	विषय	संख्या	प्रतिभागी
1.	महाराज उत्पादक	1	20
2.	नुर्मि पालन	1	22

विसावा गतिविधियाँ

क्र.सं.	विषय	संख्या	प्रतिभागी
1.	प्रदोष विषय	2	80
2.	विनाशक प्रदर्शनी	2	33
3.	विद्युत खाद्य विषय	1	22
4.	गैदालिक लड्डे आमण	1	24
5.	दूददार्जन वाला	2	लकडामूर्ह
6.	लकडामूर्ह यात्रा से खबरें	12	लकडामूर्ह
7.	वैशालिकों का प्रदोष आमण	5	35
8.	कैंच यात्रा गृहस्थों का आमण	8	61

● सामयिक कृषि संदेश

जनवरी से मार्च

- ❖ यदि हरा चारा उपलब्ध नहीं है तो पशुओं को विटामिन 'ए' का पाउडर 20-25 ग्राम प्रति 100 किलो ग्राम दाना मिश्रण में मिलाकर पशुओं को दें।
- ❖ यूरिया उपचारित भूसा पशुओं को खिलाने से भूसे में प्रोटीन की मात्रा पशुओं को आसानी से सस्ते में मिल जाती है। इसके लिये 100 किलो भूसा+4 किलो यूरिया को 65 लीटर जल में घोलकर भूसे को समतल कैलाकर ऊपर से घोल में छिड़क दें तथा तीन सप्ताह तक भूसे को ढक दें। इसके बाद पशुओं को शुरू में थोड़ा-थोड़ा उपचारित भूसा एवं गेहूं/जो/जई के रावत के साथ मिलाकर खिलाये जब पशु इनको खाने में लधि लेने लगे तो फिर राशन मिलाना बंद कर दें तथा पशुओं को उनकी आवश्यकतानुसार खिलायें।
- ❖ पशुओं को ठण्ड से बचाने के लिये रात के समय दरवाजों को कपड़ों से अच्छी तरह से ढक दें जिससे हवा न जाये साथ ही पशुओं को ताजा पानी पिलाये तथा धूप निकलने पर धूप में बांधे।
- ❖ ज्यादा दूध देने वाले पशुओं को कैरिश्यम की शारीरिक पूर्ति के लिये सस्ता एवं अच्छा स्रोत 500 ग्राम कलई/चूना 100 लीटर पानी में मिलाकर प्रतिदिन एक लीटर पानी पशु को पिलाये।
- ❖ जनवरी-फरवरी में- बैंगन, टमाटर एवं भिंच की नरसरी तैयार करें तथा फरवरी-मार्च में खेत में रोपाई 60 सेमी., लाइन से लाइन की दूरी एवं 45 से.मी. पौधे से पौधे की दूरी पर करें।
- ❖ फरवरी-मार्च में- करेला एवं तोरई की बुवाई करें। करेला 120X90 सेमी., पर (लाइनXपौधा) लोकी 180X90 सेमी., खीरा 180X90 सेमी., एवं तोराई 180X90 सेमी., पर लगाये।
- ❖ चना में पहली सिंचाई फूल बनने से पहले तथा दूसरी सिंचाई फली बनते समय करें।

नींव वर्गीय फसलें-

- ❖ सिट्रस सिस्ला- इस कीट के प्रौढ़ तथा बच्चे नींव की पत्तियों, मुलायम टहनियों तथा फलों से रस चूसकर पौधों को हानि पहुंचाते हैं। इनका प्रकोप मार्च-अप्रैल में अधिक होता है। इस कीट के बच्चे शहद की तरह का तरल पदार्थ निकालते हैं जिस पर काली फकूंद शीघ्र आकर्षित होकर पत्ती को ढक लेती है। जिससे पत्तियां अपनी दैहिक क्रिया सुचारू रूप से नहीं चला पाती।
- ❖ रोकथाम- के लिये 0.25 प्रतिशत मैलाथियान घोल का छिड़काव करें।
- ❖ लीफ माइनर- इसके द्वारा सबसे अधिक हानि मार्च से अक्टूबर के मध्य होती है। इस कीट के अण्डे फटने के बाद छोटी-छोटी सूडिया निकलती हैं जो कोमल पत्तियों पर सुंग बनाकर पत्तियों का रस चूसना व हरा पदार्थ खाना शुरू कर देती है।
- ❖ रोकथाम- रोकथाम के लिये 0.25 प्रतिशत मैलाथियान का स्प्रे करें।
- ❖ बेर की मक्की- बेर में इस मक्की से अधिक नुकसान होता है। यह मक्की कच्चे फल के नीचे अण्डे देती हों जो 2-3 दिन के अन्दर 'मैगट' उत्पन्न करते हैं। यह फल में छेद करके गूदा खाते हैं।
- ❖ रोकथाम- प्रभावित फलों को एकत्रित करके नष्ट कर दें। इसके पूर्णा को नष्ट करने के लिये पेड़ के नीचे की मिट्टी को मार्च-अप्रैल में खोद देना चाहिये तथा 250 मिली. मैलाथियान 200 लीटर पानी में मिलाकर जनवरी से फरवरी के मध्य दो बार छिड़काव करें।

अपना मोबाइल नम्बर लिखावाये, घर बैठे कृषि की नई जानकारी एवं समस्याओं का समाधान पायें। डॉ. रमेश कुमार सिंह- 9424601102

अप्रैल से जून

- ❖ खाली खेतों में गर्मी की जुताई करें। जिससे उनके अन्दर पड़े कीटों के रूप में अण्डे एवं फकूंद के बीजाणु अधिक गर्मी से मर सके।
- ❖ देशी बेर की झाड़ियों की पैदान्य चढ़ाने (कलिकायन) हेतु कटाई फरवरी माह में करें।
- ❖ आम में मैंगो मालकारमेशन (आम के गुच्छे बनना) एक क्वक फ्लूजेरियम मोनिली फार्म के द्वारा होता है। इसकी रोकथाम का कोई विशेष उपाय नहीं है। गुच्छों को काटकर गड्ढों में दबा दें अथवा जला दें इसके बाद 200 पी.पी. एम., एन.ए.ए. का पौधों पर छिड़काव लाभ दायर करें।
- ❖ आम का होपर (आम का भुनगा)- यह एक छोटा फुदकने वाला मटमेले रंग का कीट होता है। इस कीट के निष्फ (बच्चे) एवं वयस्य पत्तियों एवं बौर (फूल) का रस चूसते हैं जिससे फसल को 60 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है।
- ❖ रोकथाम- 0.2 प्रतिशत मैलाथियान का एक स्प्रे सर्वियों में तथा दूसरा स्प्रे फूलों के खिलाने से पहले करना चाहिये।
- ❖ मैंगो मिली बग- यह कीड़ा अमरुल, नीबू तथा बेर के पौधों को भी नुकसान पहुंचाता है। यह बग फरवरी से जून तक आम के नुकसान पहुंचाता है।
- ❖ रोकथाम- मानसून के तुरन्त बाद पौधों के नीचे खुदाई करें। पौधों की पीड़ (ट्रंक) पर चिपकने वाली पट्टी लगाये यह रोजिन (6 पोण्ड) तथा अण्डी का तेल (5 पोण्ड) 10 मिनिट तक गरम करके लगाये तथा कीड़ों को शाखाओं पर मारने के लिये रोगार 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आम का खर्रा (पाउडरी मिलड्यू)- यह फकूंद से होने वाला रोग है। इस रोग के प्रभाव से फूलों, फलों, पत्तियों एवं डण्डलों पर सफेद रंग का चूर्ण जम जाता है। जिससे फूल एवं पत्तियां झड़ जाती हैं।
- ❖ रोकथाम- 500 ग्राम केराथन दवा को 1000 लीटर जल में घोलकर बाग में 10-15 दिन के अन्तर से 2-3 बार पेड़ों पर छिड़काव करें।
- ❖ कपास के बीज में गुलाबी सूंडी को नष्ट करने के लिये एल्यूमीनियम फारफाइड की एक टिकिया से 70 कि.ग्रा. बीज को धूमित करें।



डॉ.आर.के.एस.लोमर, श्री विवेक चतुर्वेदी अध्यक्ष सह.बैंक, टीकमगढ़ एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों का अमरुल की मिडो बगीचा पर्यावरण के बारे में बताते हुए।

● जनवरी से मार्च 2011

भिण्डी की उन्नत खेती-

भूमि- अच्छे जल निकास वाली एवं कार्बनिक पदार्थ युक्त दुमट भूमि उपयुक्त रहती है।

उन्नत किस्मे- वीआरओ-6, पूसा मखमली, पूसा सावनी, पूसा सलेक्सन-1,2,3

बोने का समय- ग्रीष्म ऋतु की फसल- जनवरी से मार्च
वर्षा ऋतु की फसल- जून में जुलाई

बीज उपचार- 3 ग्राम धीरम से प्रति किलो बीज को उपचारित करें

बीज की मात्रा- ग्रीष्म ऋतु- 18-20 किलो बीज/हेक्टेयर

वर्षा ऋतु- 10-12 विलो बीज प्रति किलो ग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करें।

बोने की दूरी- ग्रीष्म ऋतु- 30X30 सेमी, वर्षा ऋतु- 45X45 (पौधालाइन)

भिण्डी की अच्छी फसल के लिये 30 टन गोबर की सड़ी हुई खाद बोने के 2 सप्ताह पहले मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिये। इसके बाद 300 किलो अमोनियम सल्फेट, 350 किलो सुपर फास्फेट तथा 125 किलो न्यूरेट ऑफ पोटाश बुबाई से पहले कूड़ में देनी चाहिये। एक महीने बाद 300 किलो अमोनियम सल्फेट की टॉप ड्रेसिंग करें।

सिंचाई- बोने के समय यदि नमी की कमी हो तो एक हल्की सिंचाई करके बोनी करनी चाहिये। इसके बाद गर्मियों में एक सप्ताह के अन्तर पर तथा वर्षा में जब पानी की आवश्यकता हो सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण एवं अंतःनियाये- ग्रीष्म ऋतु की फसल में 3-4 गुडाई तथा वर्षा की फसल में 2-3 गुडाई करें। वर्षा की फसल में मिट्टी भी चढ़ायें।

तुडाई- भिण्डी की प्रथम फली बनने के बाद प्रत्येक दूसरे तीसरे दिन फलियों की तोड़ाई करते रहना चाहिये। तुडाई का सबसे अच्छा समय फूल खिलने के 6-7 दिन बाद होता है।

पैदावार- 50-80 कुण्टल/हेक्टेयर

कीड़े-मक्कीड़े-

भिण्डी तना छेदक- रोकथाम मेलाधियान 50 ईसी का 1 मिली, प्रति लीटर पानी प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

जेसिड- यह पत्तियों का रस चूस लेते हैं। जिससे पत्तियां सिकुड़ जाती हैं।

रोकथाम- रोगार 30 ईसी का 2 मि.ली.प्रति लीटर पानी में मिलाकर घोल का छिड़काव करें।



गर्मी में मूर्ग की खेती-

भूमि- दोमट भूमि उपयुक्त रहती है।

खेती की तैयारी- रबी की फसल कटने के तुरन्त बाद खेत की सिंचाई करें। खेत ओट आने पर 2 से 3 बार देशी हल से जोतकर प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लगाये जिससे नमी का हास कम से कम हो।

बुवाई का समय- मध्य मार्च से मध्य अप्रैल।

बीज की मात्रा- 20 कि.ग्रा. बीज/हेक्टेयर।

बीज उपचार- 3 ग्राम धीरम से प्रति किलो बीज को उपचारित करें तथा इसके बाद राइजोवियम तथा पी.एस.बी. 20 ग्राम कल्वर से प्रति किलो बीज उपचारित करें।

उन्नत प्रजातियाँ- के-851, पूसा-16, पीडीएम-139, एमएल-131, पंत मूर्ग-1, पूसा बैसाखी, एम.यू.एम.-1

बोने की विधि- फसल को कूड़ों में 30 सेमी. की दूरी पर बोयें।

खाद एवं उर्वरक- 20:60:20 नत्रजन, फास्फोरस, पोटास/हे. (अर्धात 100 कि.ग्रा. डी.ए.पी./हे.) उर्वरक बीज से 5-7 से.मी. गहराई पर डालें।

सिंचाई प्रवंधन- गर्मी की फसल में 5-6 सिंचाईयों की आवश्यकता पड़ती है। पहली सिंचाई बुबाई के 20-25 दिन बाद, इसके बाद 12-15 दिन के अंतराल पर सिंचाईयां करते रहे। इस बात का विशेष ध्यान रखे जब फसल अपने पूर्ण पूल अवस्था पर हो तब सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण- बुबाई के पूर्व बेसालीन 1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हे. 800-1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फसल की बुबाई के 20-25 दिन बाद निराई-गुडाई कर खरपतवारों को निकाल देना चाहिये।

रोग नियंत्रण- पीलामोजेक, यह सफेद मक्खी के द्वारा फैलने वाला विषाणु जनित रोग है। इसमें पत्तियां तथा फलियां पीली पढ़ जाती हैं, जिससे फसल पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

बचाव- सबसे अच्छा तरीका प्रतिरोधी प्रजाति जैसे- एम.एल.-131, पंत मूर्ग-1 उगायें।

छिड़काव- मेटासिस्टोक्स 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10-12 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। पहला छिड़काव लक्षण दिखने के तुरन्त बाद करें।

कटाई- फसल 60-70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।

उपज- 12-15 कुं./हेक्टेयर (5-6 कुं./एकड़)

प्रति,

दुक-पोस्ट

प्रेषक :-

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़

टीकमगढ़ (म.प्र.)-472001

दूरभाष -07683- 244934

प्रकाशक : डॉ. आर. के. एस. तोमर, कार्यक्रम समन्वयक
संकलन एवं सम्पादन : डॉ. लपेन्द्र कुमार सिंह, विषय वर्तु विशेषज्ञ (कृषि विस्तार)
डॉ. आर.के.प्रजापति (पौध संरक्षण), डॉ. बी.एल. राहु (आद्य विज्ञान)
श्री पी.पी. पड़वार (कार्यक्रम सहायक) कम्प्यूटर